अभ्यासः

1. समास का अर्थ उदाहरण के साथ बताएँ ।
2. तत्पुरुष के भेदों का सोदाहरण परिचय दें ।
3. निम्नलिखित शब्दों का विग्रह करते हुए समास बताएँ– यथाशक्ति, प्रतिदिनम्, पाणिपादम्, मातापुत्रौ, चौरभयम् ।
4. सुमेलन करें –

(क) त्रिफला	(i) घन इव श्यामः
(ख) राजपुरुषः	(ii) न आदिः
(ग) अनादिः	(iii) राज्ञः पुरुषः
(घ) घनश्यामः	(iv) त्रयाणां फलानां समाहारः

5. निम्नलिखित विग्रह वाक्यों के समस्त पद लिखें –

(क) रामश्च लक्ष्मणश्च

(ख) माता च पिता च

(ग) यशः एव धनं यस्य सः

(घ) न सुन्दरः

(ङ) न ईश्वरः

(छ) प्रत्ययाः

प्रत्यय उन शब्दांशों को कहते हैं जो निर्धारित धातुओं तथा प्रतिपादिकों से जोड़े जाते हैं। धातु से जुड़ने वाले प्रत्यय "कृत्" या "तिङ्" होते हैं । प्रतिपादिक से जुड़ने वाले प्रत्यय "सुप्" तद्धित या स्त्रीप्रत्यय होते हैं । प्रत्ययों के लगने से मूल शब्द (प्रकृति) का अर्थ बढ़ जाता है । वाक्य में प्रस्तुत होने की क्षमता तो सुप् या तिङ् प्रत्यय लगने से ही होती है । "रामः गच्छति"

रामः सुबन्त है और **गच्छति तिङन्त** है । इनमें क्रमशः 'सु' और 'ति' प्रत्यय लगे हैं ।

धातु से कृत् प्रत्यय भी लगते हैं । इनके कई भेद हैं । ये प्रत्यय विभिन्न अर्थों में होते हैं । यहाँ निर्धारित प्रत्ययों को हम देखें ।

1. **क्त्वा प्रत्यय** – यह पूर्वकालिक क्रिया में धातु से लगाया जाता है । एक ही कर्त्ता से सम्बन्ध जो क्रियाएँ होती हैं तो पूर्वकाल की क्रिया में क्त्वा प्रत्यय लगता है । इसमें "त्वा" बचता है । इसके "त्" का कहीं-कहीं सन्धि के कारण "ट" हो जाता है । जैसे–

बालकः विद्यालयं गत्वा (गम् + क्त्वा) नित्यं पठति । (गम् और पठ् –दोनों का कर्त्ता बालक है । पूर्वकालिक गम् से क्त्वा लगा है) ।

चन्द्रं **दृष्ट्वा** (दृश् + क्त्वा) शिशुः प्रसन्नः भवति ।

स गृहेऽपि **स्थित्वा** (स्था + क्त्वा) दुःखी वर्तते ।

ओदनं भुक्त्वा (भुज्+ क्त्वा) जलं पिबति ।

अन्य उदाहरण–

ज्ञा + क्त्वा	=	ज्ञात्वा (जानकर)
लभ् + क्त्वा	=	लब्ध्वा (पाकर)
दा + क्त्वा	=	दत्त्वा (देकर)
वच् + क्त्वा	=	उक्त्वा (कहकर)
कृ + क्त्वा	=	कृत्वा (करके)
स्ना + क्त्वा	=	स्नात्वा (नहाकर)
पा + क्त्वा	=	पीत्वा (पीकर)

2. **ल्यप् प्रत्यय** –यह प्रत्यय क्त्वा के अर्थ में ही होता है । उपसर्ग के बाद धातु से क्त्वा नहीं होता है ल्यप् प्रत्यय लगता है । ल्यप् में "य" बचता है । जैसे–

आ + दा + ल्यप्	=	आदाय (लेकर)
वि + हस् + ल्यप्	=	विहस्य (हंसकर)

अधि + इ + ल्यप् = अधीत्य (पढ़कर)

आ + नी + ल्यप् = आनीय (लाकर)

अनु + भू + ल्यप् = अनुभूय (अनुभव कर के)

उत् + स्था + ल्यप् = उत्थाय (उठकर)

नि + पा + ल्यप् = निपीय (पीकर)

उप + गम् + ल्यप् = उपगम्य (पास जाकर)

3. **तुमुन् प्रत्यय** –जब एक क्रिया दूसरी क्रिया के लिए होती है तब धातु से भविष्यत् काल के अर्थ में तुमुन् प्रत्यय लगता है । तुमुन् में तुम् बचता है जिसके त का कहीं–कहीं नियमतः "ट" या "ढ" हो जाता है । जैसे – बालकः **पठितुं** (पठ् + तुमुन्) गच्छति = लड़का पढ़ने के लिए जाता है ।

अहं कार्यं कर्तुम् (कृ + तुमुन्) इच्छामि = मैं काम करना चाहता हूँ । सकना, चाहना, आरम्भ करना इत्यादि क्रियाओं के प्रयोग में अप्रधान क्रिया के रूप में तुमुन् प्रत्यय का मुहावरेदार प्रयोग होता है जैसे–

पठितुम् इच्छति (पढ़ना चाहता है) । (पठ् + तुमुन्)

गन्तुं शक्नोति (जा सकता है) । (गम् + तुमुन)

प्राप्तुं वाञ्छति (पाना चाहता है) । प्र + आप् + तुमुन्

रेलयानं चलितुं प्रारभत (रेलगाड़ी चलने लगी) । चल् + तुमुन्

अन्य उदाहरण :

कथ + तुमुन् = कथयितुम् (कहने के लिए)

त्यज् + तुमुन् = त्यक्तुम् (छोड़ने के लिए)

नी + तुमुन् = नेतुम् (ले जाने के लिए)

पा + तुमुन् = पातुम् (पीने के लिए)

वच् + तुमुन् = वक्तुम् (बोलने के लिए)

श्रु + तुमुन् = श्रोतुम् (सुनने के लिए)

लिख् + तुमुन् = लेखितुम् (लिखने के लिए)

ज्ञा + तुमुन् = ज्ञातुम् (जानने के लिए)

अभ्यास:

1. **निम्नलिखित पदों की व्युत्पत्ति लिखें :**

पठितुम्, हसित्वा, लेखितुम्, आदाय, उपगम्य, पातुम्, वक्तुम्, गत्वा

2. **सही कथन के आगे (√) चिह्न तथा गलत कथन के आगे (x) चिह्न लगायें ।**

(क) "ल्यप्" प्रत्यय तुमुन् अर्थ में लगता है ।

(ख) धातु से जुड़ने वाले प्रत्ययों को तिङ् कहते हैं ।

(ग) "सुप्" प्रत्यय प्रातिपदिक से जुड़ते हैं ।

(घ) तुमुन् प्रत्यय में "तुम्" बचता है ।

(ङ) "रामः" पद सुबन्त है ।

(च) गच्छति पद सुबन्त है ।

(छ) क्त्वा प्रत्यय पूर्वकालिक क्रिया में धातु से लगाया जाता है ।